

एक नजर

**कार्यशाला में हिस्सा लेने
अजमेर पहुंचे बस्ती के
डॉ. अंगद प्रसाद पाण्डेय**



—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। ननकटी विभाग खण्ड
क्षेत्र के प्राथमिक विधायक एसिंपार
विहवार के प्रधानाध्यक्ष एवं
एसएमजी डॉ. अंगद प्रसाद पाण्डेय
भारतीय ज्ञान परंपरा के 6 दिवसीय
कार्यशाला में हिस्सा लेने राजस्थान
के अजमेर पहुंचे। डॉ. पाण्डेय यहां
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक
संस्थान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा
आयोजित कार्यशाला में बस्ती
जनपद का प्रतिनिधित्व करेंगे।

5 से 9 अक्टूबर तक आयोजित
इस इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश
से 15 प्रतिभागियों का चयन किया
गया है। कार्यशाला में देश के अनेक
राज्यों के प्रतिभागी भारतीय ज्ञान
परंपरा के विमर्श में हिस्सा लेंगे।

एटीएम कार्ड बदल खाते से उड़ाए 95 हजार रुपये

—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। कलवारी थानाक्षेत्र के
कुसीरा बाजार में लगे एटीएम से
रुपये निकालने पहुंचे एक व्यक्ति की
मदद के सहानुभूतिपूर्ण कार्य बंदकर
खाते से 95 हजार रुपये निकालने
का मामला सामने आया है। पीड़ित
ने कलवारी पुलिस को तहरीर देकर
कार्रवाई की मांग की है। कलवारी
थानाक्षेत्र के रसोइया गण निवासी
पीडित भुवनेश्वर ने पुलिस को दिये
शिकायती पत्र में बताया कि वह
कुसीरा बाजार में गेरो स्टेट बैंक के
एटीएम पर रुपये निकालने गए थे।
इसी दौरान एटीएम के अंदर मंदिर
एक व्यक्ति ने मदद करने के बहाने
उनका एटीएम कार्ड ले लिया। इसी
दौरान जलसाज ने कार्ड बदल दिया
और दूसरा कार्ड उन्हे दे दिया।

पीडित के मुताबिक बाद में उसके
मोबाइल पर खाते से रुपये निकाले
जाने का संदेश आया। जानकारी
होने पर उन्होंने बैंक से संपर्क किया
तो उसके खाते से एटीएम कार्ड
बदलकर धोखाधड़ी किया जाने की
जानकारी हुई। पीडित ने बताया कि
जालसाज ने उसके खाते से करीब
95 हजार रुपये निकाल लिए। घटना
की जानकारी होने के बाद पीडित ने
कलवारी थाना में तहरीर देकर मामले
की जांच कर आरोपी के खिलाफ
कार्रवाई तथा खाते से निकाली गई
रकम वापस करने की मांग की है।
इस मामले में थानाध्यक्ष कलवारी
संतोष कुमार ने बताया कि तहरीर
मिली है, मामले की जांच की जा
रही है।

प्रधान प्रतिनिधि को धमकी

—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। परसरामपुर पुलिस ने
प्रधान प्रतिनिधि को धमकी देने के
आरोप में मुकदमा दर्ज किया है।
इसी थानाक्षेत्र के बैथलिया निवासी
बिन्देश्वरी चौबे ने तहरीर देकर आरोप
लागवा है कि उनसे उर्फ मोनू ने
सड़क किनारे रजकबंद पैदा कर दी,
जिससे मार्ग पर जनसंचार होने लगा।
इस घटने के लिए कहां गो बिथली में
लाता-डंडे से लेश होकर अपराध
कहते हुए जान से मारने की धमकी
दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर
आरोपी उमेश शर्मा मोनू, निवासीपुर
संस्था पंडी थाना परसरामपुर के खिलाफ
मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।
वहीं इधर पुलिस ने ग्राम प्रधान
की शिकायत को देख रकमबंद के
आपराध करने के आरोप में परसराम
निवासी अजय वर्मा की तहरीर पर
अपराध करने के आरोप में पंजीत
वर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर
जांच शुरू कर दी है।

पीडब्लूडी इंजीनियर की आत्महत्या का मामले में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ जांच का आदेश

तिरुवनंतपुरम (आगम)।
केरलम के गृह मंत्री रमेश चैन्नियल
ने रविवार को मुख्य चुनाव आयुक्त
ज्ञानेश कुमार के खिलाफ जांच के
आदेश दिए हैं। मामला मलेशियाई
सिविल इंजीनियर ली सी बीन की
आत्महत्या से जुड़ा है। वह केरल
स्टेट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट (KSTP)
के तहत MC रोड के अपग्रेडेशन
का काम कर रहे PAI&BEL
कंसोर्टियम से जुड़े थे। शिकायत के
मुताबिक, ली सी बीन ने आरोप
लागवा था कि सड़क के काम का
मुताबिक जारी करने के बदले
तत्कालीन पीडब्लूडी सचिव ज्ञानेश
कुमार ने रिश्तत मांगी थी। यह सड़क
प्रोजेक्ट मल्टी बैंक के मदद से चल



रहा था।
चैन्नियल ने बताया कि उन्हें
शिकायत मिली थी कि 2006 में हुई
विजिलेंस जांच बाहरी दबाव के कारण
प्रभावित हुई थी। इसके बाद उन्होंने

मामले की दोबारा जांच के आदेश
दिए। उन्होंने कहा कि विजिलेंस पूरे
मामले की जांच करेगी और जरूरत
पड़ने पर कानूनी कार्रवाई भी करेगी।

या था पूरा मामला

साल 2006 में अंगमाली से
तिरुवनंतपुरम तक की 'एमसी रोड'
को दोबारा बनाने का काम शुरू हुआ
था। इस काम का खर्च करीब 215

करोड़ रुपये था, जिसके लिए पैसा
'विश्व बैंक' ने दिया था और यह
काम केरल सरकार के परिवहन
विभाग ने संभाला था। 2006 में
ज्ञानेश कुमार केरल में लोक निर्माण
विभाग के सचिव थे। इसी प्रोजेक्ट
के दौरान एमलेशियाई सिविल
इंजीनियर ने आत्महत्या कर ली थी।
उस समय केरलम के रजिस्ट्रार
एंड एटी-केशन ब्यूरोर ने इस
मामले को लेकर ज्ञानेश कुमार के
खिलाफ एक बुरुआती जांच की थी,
लेकिन जांच पूरा नहीं हुई। केरलम
के गृह मंत्री रमेश चैन्नियल ने 2006
के उस पुराने मामले और इंजीनियर
की आत्महत्या से जुड़ी फाइलें फिर
से तलब कर ली हैं। गृह मंत्री ने
वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश
कुमार के खिलाफ इस मामले में
फिर से विजिलेंस जांच के आदेश दे
दिए हैं।

यूजीसी के नये कानून की वापसी की मांग को लेकर मेधा का धरना 42 वें दिन भी जारी



—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। मेधा पार्टी द्वारा शिक्षा
व्यवस्था में सुधार, यूजीसी के नये
कानून की वापसी सहित 7 सूत्रीय
मांगों को लेकर गांधीवादा भवन
परिसर में बापू प्रतिमा के निकट
चल रहा धरना रविवार को 42 वें
दिन भी जारी रहा। धरना स्थल
आन्दोलनकारियों द्वारा पितृ पक्ष में
अधिकारों के लिये संघर्ष के दौरान
अपने प्राण गवाने वाले शत्रु, अज्ञात
लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के
साथ ही लोगों को विचरा, दही
खिलाया गया।

मेधा पार्टी के केन्द्रीय प्रवक्ता
दीन दयाल त्रिपाठी ने कहा कि कहा
कि यह हरान करने वाली स्थिति है
कि 42 दिन के लम्बे धरने के बावजूद
अभी तक केन्द्र सरकार के स्तर पर
कोई सकारात्मक पहल नहीं किया
गया। इससे सरकार की निष्ठुरता
उजागर हो जाती है। कहा कि जब
तक मोने नहीं हो जाते जिन्हा के
का धरना अवसर जारी रहेगा। कहा
कि इस मसले पर केन्द्र सरकार की
उपजात्र रविवारी भाषिकाओं को
उजागर कर दिया है। मानपा अंजीवो
की तरह समाज में फूट डालो कर
करे की नीति पर चल रही है, देश
का छात्र अब इसे समझ चुका है।
भाजपा सरकार पर यूजीसी को लेकर
बुनी आने वाले चुनावों में भारी पड़ेगी।

साइबर एटीएम देने वाले 2 गिरफ्तार



—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। साइबर एटीएम के लिए बैंक
खाते और एटीएम कार्ड उपलब्ध
कराने वाले दो आरोपियों को साइबर
क्राइम थाने की पुलिस ने गिरफ्तार
किया है। पुलिस के अनुसार,
आरोपियों के बैंक खातों में देश के
अलग-अलग राज्यों से साइबर एटी
की रकम आने के साथ मिले हैं।
पूछताछ में सामने आया कि एक
आरोपी बैंक खाते और एटीएम कार्ड
उपलब्ध करता था, जबकि दूसरा
यूजीसी से जुड़े टीपीपी ग्रुप के जरिए
साइबर एटी की रकम बैंक खातों में
भेजी जाती थी। इसके बाद एटीएम
से नकदी निकालकर कमीशन के
जरिए रकम को आगे भेजा जाता
था। पुलिस के मुताबिक, रकम को
यूएसडीटी के माध्यम से चीन भेजने
की बात भी सामने आई है।

पुलिस ने दो आरोपियों के
कब्जे से तीन एंड्रॉइड मोबाइल, दो
एटीएम कार्ड, दो आधार कार्ड की
छापामार्ग और 550 रुपये बरामद
किए। अभिजित के मोबाइल में
होटमैरप चोट भी मिली, जिसकी
जांच की जा रही है। साइबर क्राइम
थाने में 3 अक्टूबर को मुकदमा
दर्ज किया गया। पुलिस ने उसी
दिन दोनों आरोपियों को गिरफ्तार
किया। मामले की जांच निरीक्षण
मनवात सिंह को सौंपी गई है।

भाजपा के नवनिर्णुक्त जिला प्रभारी डॉ. सतेन्द्र सिन्हा ने दिया पार्टी की नीतियों से जन-जन को जोड़ने पर जोर

—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के
नवनिर्णुक्त जिला प्रभारी एवं क्षेत्रीय
महामंत्री डॉ. सतेन्द्र सिन्हा के श्रम
बस्ती आगमन पर पार्टी कार्यकर्ताओं
तथा पदाधिकारियों ने उनका स्वागत
किया।



भाजपा जिलाध्यक्ष विक्रमनंद मिश्रा
के नेतृत्व में बड़ी संख्या में
जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ पदाधिकारी और
कार्यकर्ता कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
कार्यक्रम की शुक्रवात प्रभारी टोल
सिन्हा से हुई, जहाँ कार्यकर्ताओं ने
माल्यापूर कर तथा गुलाब की
पंखुटियों को वाप करके हुए डॉ.
सिन्हा का स्वागत किया। स्वागत
काफिला बड़े वन चौराहा, कटवा
चौराहा, अलद चौराहा और दीनाना
कहरोती होते हुए भाजपा जिला
कार्यालय पहुंचा। जिला कार्यालय
में आयोजित परिषदाध्यक्ष बैठक में
नवनिर्णुक्त जिला प्रभारी ने उपस्थित
कार्यकर्ताओं से परिचय किया और
संयुक्तजनक दिशा-निर्देश देते हुए
आगामी कार्यक्रमों तथा जन-जन

दयागम चौधरी, प्रेम सागर तिवारी,
यशकान्त सिंह, सुशील सिंह, पवन
कमलेश्वर, संजय चंडेरी, अमनी प्रताप
सिंह, अंकुश वर्मा, राणा दिनेश प्रताप
सिंह, गजेंद्र सिंह, प्रवृक्ष विक्रम सिंह
भाद प्रकाश मिश्रा, अखंड प्रताप सिंह,
रघुवर पांडे, वैद्यनाथ, ब्रह्मदेव
यादव, दिलीप पाण्डेय, शिवानी सिंह,
शालिनी मिश्रा, अभिषेक कुमार गौरी,
प्रेम प्रकाश चौधरी, सुनील सिंह, राकेश
शर्मा, राजेश राजेश्वर, नीलम गौड़,
प्रदीप निषाद, सुरेंद्र कुमार चौधरी,

भदोही का नाम बदलकर अब होगा संत रविदास नगर—योगी आदित्यनाथ

भदोही (आगम)। विधानसभा
चुनाव से पहले सीएम योगी ने बड़ी
घोषणा की है। रविवार को सीएम
योगी आदित्यनाथ ने भदोही जिले का
नाम बदलने की घोषणा की। भदोही में
आयोजित एक कार्यक्रम में घोषणा
करते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ ने
कहा, अब हमारा भदोही जिला संत
रविदास नगर भदोही के नाम से
जाना जाएगा। रा योगी आदित्यनाथ
भदोही में एक कार्यक्रम को संबोधित
कर रहे थे, जहां उन्होंने 1,340 करोड़
रुपये से अधिक की लागत वाली 112
परियोजनाओं का उद्घाटन और
शिलान्यास किया।



मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने
रविवार को कहा कि संत रविदास
नगर (भदोही), मिर्जापुर और वाराणसी
को सिकंदर वलट्टर के रूप में
विकसित किया जाएगा तथा
वाराणसी-कैथी रोजनल डेवलपमेंट

रान को जल्द लागू किया जाएगा।
सीएम योगी ने यहां इंडिया कारपेट
एक्सपोजे के रवर्न जयंती संस्करण में
कार्यक्रम उद्घाटन से जुड़े नियातकों,
विकेताओं और प्रमुख उद्यमियों के
साथ संवाद के दौरान यह बात कही।
इस दौरान उद्यमियों ने कालीन उद्योग
के लिए अलग नीति बनाने, कारोबार
से जुड़ी आवश्यकताओं तथा महिला
को सिकंदर वलट्टर के रूप में विकसित
विभिन्न मुद्दे चर्चामंत्री के समक्ष रखे।
सीएम योगी ने उद्यमियों की समस्याओं

और सुझावों को गंभीरता से सुना
तथा संबंधित मंत्रों पर सरकार की
और से आवश्यक कार्रवाई का भरपूर
लियाया।

मिर्जापुर के कालीन कारोबारी
अनिल कुमार ने बेहतर कनेक्टिविटी
का उल्लेख करते हुए सरकार को
प्रयासों के माफि लाभ मिला है। उन्होंने
मिर्जापुर शहर और वहां के कालीन
कारोबार से जुड़े विषय मुख्यमंत्री के
समक्ष रखे। उद्यमी रमिथवाज अहमद
ने कहा कि एक जिला एक उद्यम
(ओडीओपी) योजना से कारोबारियों
को काफी लाभ मिला है। उन्होंने
विकेता उद्योग के लिए भी इसी तरह
पर अलग नीति बनाने की मांग की।
उनका कहना था कि इससे कारोबार
को बढ़ावा मिलने के साथ ही उद्यमों
के नए अवसर पैदा होंगे। पीयूष कुमार
बरवाल ने हस्तनिर्मित कालीन उद्योग
के लिए अलग व्यवस्था का सुझाव
दिया।

पुष्पा रानी मण्डल अध्यक्ष, प्रतिभा पटेल अध्यक्ष, अनुराधा पाण्डेय मंत्री घोषित

—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। रविवार को प्रसन्न बंगमगर
में उ.प्र. बाल विकास सुरवाईजर
एसोसिएशन का अधिवेशन और चुनाव
पुष्पा रानी की अध्यक्षता में सम्पन्न
हुआ। अधिवेशन में बाल विकास
सुरवाईजर की समस्याओं पर विचार
करने के साथ ही पुरानी पैशन बहाल
किये जाने, प्रमुख मांगों पर नियंत्रण
लिये जाने को मुद्रा छाया रहा।
दूसरे धरम में चुनाव अधिकारी राज्य
कर्मचारी संयुक्त परिषद मंत्री लीलू
प्रसाद की देख रेख में सम्पन्न हुये
चुनाव में, पुष्पा रानी मण्डल अध्यक्ष,
प्रतिभा पटेल अध्यक्ष, अनुराधा पाण्डेय
मंत्री, नमता सिंह को बस्ती शाखा
का कोषाध्यक्ष घोषित किया गया।



राज्य कर्मचारी संयुक्त
परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष राम
अभार पाल ने पदाधिकारियों को पर
और गोपनीयता की सख्त दिशाते
हुये कहा कि राज्य कर्मचारियों के
अधिकार एक-एक कर छीने जा रहे
हैं, शाखाओं पर विचार नहीं कर
रही है, स्थानीय स्तर की मांगों को
लेकर भी सम्बंधित अधिकारी उदासीन
हैं, ऐसी स्थिति में एकदम होकर
संघर्ष करने से ही कर्मचारियों के

उ.प्र. बाल विकास सुरवाईजर एसोसिएशन के अधिवेशन में गुंजा कर्मचारी हितों का मुद्रा

अधिकार सुरक्षित रह पायेंगे।

अधिवेशन को राज्य
कर्मचारी संयुक्त परिषद अध्यक्ष
मस्तुराम वर्मा, कलेक्ट्रेट मीनीस्ट्रीयल
मिन्टारी संघ के पूर्व अध्यक्ष अशीक
मिश्र, बाल विकास सुरवाईजरों
एसोसिएशन की प्रांतीय अध्यक्ष
रेनु शुक्ला, प्रांतीय महामंत्री
शशिकांता आदि ने आठवे वेतन
आयोग को शीघ्र लागू किये जाने,
कोराना का कर्म के रोकें गये 18 माह
के हेमगाई मस्ते को दिने जाने सहित
कर्मचारियों की अनेक प्रमुख मांगों

सेवा संकल्प शिविर में पात्रों को योजनाओं से जोड़ने की पहल

—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। सेवा संकल्प अभियान
के तहत विकासखंड हरिया के ब्लॉक
समागार में चल रहे पात्र दिवसीय
बहुउद्देशीय सेवा शिविर के दूसरे दिन
रविवार को कार्यक्रम का कुलमंडल
अधिकारि भाजपा नेता मिर्जा शंकर
दुवे और अतिथि भाजपा मंडल उषाक
यश वेद प्रकाश त्रिपाठी ने किया।
इस दौरान विभिन्न विभागों की ओर
से लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण
कर अतिथियों ने योजनाओं और
उपलब्ध सेवाओं की जानकारी ली।



मुख्य अतिथि मिर्जा शंकर
दुवे ने कहा कि शिविर का उद्देश्य
पात्र लोगों को सरकारी योजनाओं
की जानकारी उपलब्ध करने के साथ
उन्हें योजनाओं का लाभ दिलाना
है। ग्रामीणों को अलग-अलग विभागों
के कार्यालयों के सबकर न लगाने
पड़ें, इसके लिए एक ही स्थान पर
विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराई जा
रही हैं। उन्होंने अधिकारियों और
कर्मचारियों से पात्र लाभार्थियों को
आवेदन और समस्याओं के निस्तारण
में तत्परता बरतने की बात कही।
वेद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि ऐसे

शिविरों के माध्यम से ग्रामीणों को
योजनाओं की जानकारी वास्तवी में
मिल रही है। उन्होंने अधिक के अधिक
पात्र लोगों को शिविर का लाभ दिलाने
पर जोर दिया। शिविर में विभिन्न
विभागों की ओर से लगाए गए
स्टॉलों पर योजनाओं की जानकारी
देने के साथ पात्र लाभार्थियों
को सेवाओं से जोड़ने की प्रक्रिया
जारी रही। अधिकारियों ने अतिथियों
को विभागवार उपलब्ध सेवाओं और
अव तक किए गए कार्यों की जानकारी
दी। कीडो विषय कुमार सिंह ने
बताया कि पात्र दिवसीय शिविर में
विभिन्न विभागों की सेवाएं उपलब्ध

शिविरों के माध्यम से ग्रामीणों को
योजनाओं की जानकारी वास्तवी में
मिल रही है। उन्होंने अधिक के अधिक
पात्र लोगों को शिविर का लाभ दिलाने
पर जोर दिया। शिविर में विभिन्न
विभागों की ओर से लगाए गए
स्टॉलों पर योजनाओं की जानकारी
देने के साथ पात्र लाभार्थियों
को सेवाओं से जोड़ने की प्रक्रिया
जारी रही। अधिकारियों ने अतिथियों
को विभागवार उपलब्ध सेवाओं और
अव तक किए गए कार्यों की जानकारी
दी। कीडो विषय कुमार सिंह ने
बताया कि पात्र दिवसीय शिविर में
विभिन्न विभागों की सेवाएं उपलब्ध

कवि समेलन-कर्मठता का दीप जलाकर, चारों तरफ ज्वाला कर दो

—भारतीय बस्ती संवाददाता—
बस्ती। बापू-शास्त्री जन्म जयन्ती
के उपलक्ष्य में साहित्यिक संस्था
अदबी संगम द्वारा जिला पंचायत
कार्यालय के निकट कवि समेलन
का आयोजन किया गया। अध्यक्षता
वरिष्ठ कवि डॉ. रामकुमार लाल
'जगमग' और संचालन डॉ. अफजल
हुसेन 'अफजल' ने किया।



मुख्य अतिथि के रूप में
काव्य पाठ करते हुये वरिष्ठ कवि,
विक्रमसिंह, साहित्यकार डा. बी.के.
वर्मा ने 'वातावरण निराला कर दो,
नीलम को मवाला कर दो कर्मठता
का दीप जलाकर, चारों तरफ ज्वाला
कर दो' सुनाकर संदेश दिया। डॉ.

'अफजल', दीपक सिंह प्रेमी,
विहारी, साहित्यकार डा. बी.के.
वर्मा ने 'वातावरण निराला कर दो,
नीलम को मवाला कर दो कर्मठता
का दीप जलाकर, चारों तरफ ज्वाला
कर दो' सुनाकर संदेश दिया। डॉ.

सम्पादकीय

विकास की असली परीक्षा

विकास की चर्चा होते ही हमारे सामने बड़ी सड़कें, नए भवन, पुल, सरकारी योजनाएँ और करोड़ों रुपये की परियोजनाओं की तस्वीर सामने आती है। निश्चित रूप से ये सब विकास के जरूरी हिस्से हैं, लेकिन विकास की असली तस्वीर इससे कहीं आगे की है।

सवाल यह भी है कि इन सुविधाओं के बीच आम आदमी का कितना समय बच रहा है और उसकी रोजमर्रा की जिंदगी कितनी आसान हो रही है?

किसी शहर में सड़क बन जाए, लेकिन उस पर रोज जाम लगे तो विकास अक्षर है। अस्पताल की इमारत तैयार हो जाए, लेकिन मरीज को इलाज के लिए लंबी कतार में घंटों खड़ा रहना पड़े तो सुविधा का उद्देश्य कमजोर पड़ जाता है। सरकारी कार्यालय आधुनिक हो जाए, लेकिन एक छोटे से काम के लिए नागरिक को कई बार चक्कर लगाने पड़े तो व्यवस्था पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

आज सबसे बड़ी चीज केवल जमीन, पेट्रोल या सामान नहीं है। बल्कि समय भी है। नौसैरी करने वाला व्यक्ति अगर रोज एक-दो घंटे जाम में गंवा रहा है, जिसका अगर प्रमाणपत्र या किसी सरकारी काम के लिए कई बार तहसील पर चक्कर लगा रहा है, छात्र अगर परिवहन की अव्यवस्था के कारण समय पर स्कूल-कॉलेज नहीं पहुंच पा रहा है, तो इसका असर सीधे उसकी जिंदगी और उसकी कमाई पर पड़ता है।

छोटे शहरों और जिला मुख्यालयों के सामने यह चुनौती और बड़ी है। यहां विकास की योजनाएँ तो आती हैं लेकिन कई बार अलग-अलग विभागों के बीच तालमेल की कमी दिखाई देती है। सड़क बनती है तो कुछ समय बाद किसी दूसरे काम के लिए खोद दी जाती है। नाली बनती है तो पानी निकासी की समस्या बनी रहती है। यातायात व्यवस्था बदलती है तो पार्किंग की व्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। नतीजा यह होता है कि जिस सुविधा के लिए पैसा खर्च किया गया, उसका पूरा लाभ जनता को नहीं मिल पाता।

हमें विकास को केवल खर्च किए गए पैसे या पूरी हुई परियोजनाओं की संख्या से मापने की आदत बदलनी होगी। किसी योजना की सफलता का सबसे सरल पैमाना यह हो सकता है कि उससे आम नागरिक की परेशानी कितनी कम हुई। क्या अस्पताल में इलाज जल्दी मिला? क्या सड़क से सफर का समय कम हुआ? क्या सरकारी कार्यालय में काम के लिए कम चक्कर लगाने पड़े? क्या बच्चों को सुरक्षित और समय पर स्कूल पहुंचने की सुविधा मिली? क्या बाजार में खरीदारी करने वाले नागरिक के लिए पार्किंग और यातायात की व्यवस्था बेहतर हुई?

इन सवालों के जवाब ही विकास की वास्तविक तस्वीर सामने ला सकते हैं। सरकारी योजनाएं बनाती हैं, बजट जारी होता है और विभाग काम भी करते हैं। लेकिन जनता के लिए अंतिम परिणाम सबसे महत्वपूर्ण होता है। कागज पर पड़ी हुई परियोजनाएं और जमीन पर काम आने वाली परियोजना के बीच यही अंतर है।

इसलिए अब विकास की प्राथमिकताओं में समय, सुविधा और व्यवस्था को भी उतनी ही जगह मिलनी चाहिए जितनी सड़क, भवन और बजट को मिलती है। किसी नागरिक को उसके काम के लिए कम चक्कर लगाने पड़े, कम समय बाँदा हो और सरकारी व्यवस्था पर उसका भारीसा बंधेकभी किसी भी शहर और जिले के बेहतर होने की सबसे बड़ी इशानी होगी।

बड़ी परियोजनाएँ शहर की तस्वीर बदल सकती हैं, लेकिन अच्छी व्यवस्था आम आदमी की जिंदगी बदलती है। और आखिरकार विकास का अंतिम उद्देश्य भी यही होना चाहिए—सरकारी योजनाओं की चमक नहीं, आम नागरिक के जीवन में वास्तविक आसानी।

वायरल होने से बड़ी चीज है सच होना

आज के दौर में खबर लोगों तक पहुंचने में पहले से कहीं ज्यादा समय नहीं लेती। मोबाइल पर एक वीडियो आया, कुछ ही मिनटों में वह हजारों लोगों तक पहुंच जाता है। किसी घटना की रिपोर्ट सोशल मीडिया पर पोस्ट होती है और देखते ही देखते लोग उस पर अपनी राय बनाने लगते हैं। सूचना के इस तेज दौर ने पत्रकारिता को आसान भी बनाया है और चुनौतीपूर्ण भी।

आज सबसे बड़ा सवाल यह नहीं रह गया है कि खबर कितनी जल्दी आसानी आई। सवाल यह है कि खबर कितनी सही है।

सोशल मीडिया पर वायरल होना अब कई लोगों के लिए खबर की सच्चाई का प्रमाण बन गया है। किसी पोस्ट पर लाइक्स या जाएँ तो उसे सच मान लिया जाता है। किसी वीडियो पर हजारों डिपणियाँ हो जाएँ तो उसके पीछे की पूरी कहानी जान लेना ही लोग फेंसला चुना देते हैं। यही जल्दबाजी कई बार अफवाह को खबर और अंधेरी जानकारी को सच बना देती है।

पत्रकारिता का काम केवल सूचना से पहले सूचना देने का नहीं है। पत्रकारिता का असली दायित्व सूचना की जांच करना, उसके पीछे की वास्तविकता समझना और उसे जिम्मेदारी के साथ जनता तक पहुंचाना है।

करीब छह दशकों की वीडियो पुराना हो सकता है। किसी दूसरे शहर की तस्वीर को किसी नए स्थान की घटना बताकर साझा किया जा सकता है। किसी वयन की कुछ पंक्तियाँ काटकर एक संतानि अर्थ पूरी तरह बदला जा सकता है। इन सबके बीच आम पाठक के लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि सही क्या है और गलत क्या।

यही स्थानीय पत्रकारिता की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। किसी जिले में कोई घटना होती है, तो वहां का स्थानीय पत्रकार कभी पर जाकर स्थिति देख सकता है, संवादकें ही देखने को बात कर सकता है और प्रमाणन का पक्ष भी जान सकता है। यह काम केवल सोशल मीडिया की पोस्ट रचनेवाले नहीं किया जा सकता।

लेकिन स्थानीय पत्रकारिता के सामने भी एक चुनौती है। तेजी से खबर देने की होड़ में अगर बिना पुष्टि के कुछ प्रकाशित कर दिया गया तो उसका असर केवल एक पुराने तक सीमित नहीं रहता। स्थानीय स्तर पर खबर का सीधा असर लोगों, संस्थानों और संबंधित परिवारों पर पड़ सकता है। इसलिए हमेशावर संचारणों को भी यह तय करना होगा कि उनकी पहचान केवल "सबसे पहले खबर" से बनेगी या "सबसे भरोसेमंद खबर" से।

राहुल गांधी के ‘वोट चोरी’ से आगे क्यों पहुंची ‘काकरोच’

तवलीन सिंह

काकरोच जनता पार्टी ठीक क्या कर रही है और इंडिया गठबंधन गलत क्या कर रहा है? इस सवाल से शुरू कर रही हूँ इस सप्ताह इसलिए कि दो आंदोलन शुरू हुए गांधी जयंती के दिन जिनका मकसद एफ था—ज्ञानेश कुमार से इस्तीफा लेना। दोनों में जमीन आसमान का अंतर था।

एक तरफ बंद कमरों में बैठकर सलाह—मशविरा करते दिखे विपक्ष के सबसे बड़े नेता और दूसरी तरफ काकरोच जनता पार्टी के नेता दिखे मुंबई की सड़कों में आम लोगों से सीधा संपर्क करते हुए। कमरे में बैठे नेताओं के चेहरों पर थकावट और मायूसी दिखी और सड़क पर जुटे नेताओं के चेहरों पर ऊर्जा और उम्मीद। अभिजीत दिपके और उनके साथी आम लोगों में आम लोग बने।

विपक्ष में भी विरासत की राजनीति?

नेता प्रतिपक्ष के साथ दिखे राजनीतिक वारिस। उमर अम्बुल्ला, सुप्रिया सुले, महबूबा मुफ्ती। कहने को तो ये विपक्ष के सबसे बड़े राजनेता हैं, लेकिन वास्तव में राजघरानों के वारिस हैं, जिनको राजनीति और राजनीतिक दल विरासत में मिली है। इसलिए इनकी मर्जी से चलते हैं उनके राजनीतिक दल। यानी कहने को तो मल्लिकार्जुन खरगे चुनाव जीत कर कांग्रेस अध्यक्ष बने थे, लेकिन इस चुनाव के बारे में जिनको जानकारी है, उनका कहना है कि



शशि थरूर को हराने का आदेश 'ऊपर' से जारी हुआ था। इसलिए उनका खरगे को हराना 'मुश्किल' नहीं, मामूलीकाम था। इंडिया गठबंधन औपचारिक तौर पर भाजपा का मुख्य प्रतिद्वंद्वी है, लेकिन पिछले बार सांसदों में इतने कम चुनाव जीत पाए हैं इस गठबंधन के राजनेता कि लोग शायद ठीक कहते हैं कि मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की जिद इसलिए कर रहे हैं कि इन्होंने उनके राजनीतिक दल। यानी कहने को तो मल्लिकार्जुन खरगे चुनाव जीत कर कांग्रेस अध्यक्ष बने थे, लेकिन इस चुनाव के बारे में जिनको जानकारी है, उनका कहना है कि

क्यों असफल होता रहा है। उनका जवाब था कि इस नाकामी के पीछे एक बड़ा कारण है कि विपक्ष के राजनेताओं में साहस कम दिखाता है। दिपके ने कहा कि जंतर मंतर पर जो बच्चे और युवा आए थे काकरोच जनता पार्टी के लिए समर्थन जताने, उनके पास न पैसा था और न राजनीतिक अनुभव, लेकिन उनके पास सिर्फ 'साहस' था, जिसकी वजह से आंदोलन कर रहे थे, बावजूद इसके कि इन पर पुलिस ने पैसेटें बंदकों से गोशियां बलाई थीं। इस तरह के साहस की सख्त जरूरत है। दिपके और उनके साथी मुंबई में थे पिछले सप्ताह गांधी जयंती के दिन एक

आम समा में हिस्सा लेने। इस आमसभा के लिए समर्थन जुटाने सड़कों पर पैदल घूमकर लोगों से कहते दिखे कि गांधी जयंती के दिन उनको शिवाजी पार्क जरूर आना चाहिए। बांदा में शाहकृष्ण खान के घर 'मन्त्र' के संकेतन जब पहुंचे थे एक अध्यापिका ने दिपके को पहचान कर अपनी गाड़ी रोकी और कहा, 'थैंक यू आपको कहना चाहती हूँ इसलिए कि आप जो कर रहे हैं, उससे मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। इसकी रील काकरोच जनता पार्टी ने सोशल मीडिया पर डाली अपना संदेश अगर बढ़ाने के लिए। अभी तक दिपके कहते आए हैं कि उनका

राजनीतिक पार्टी बनाने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन अपनी तरफ से उम्मीद करती हूँ कि वे अपना इरादा बदलकर 2029 के आम चुनाव में हिस्सा लें। यह इसलिए कि काफ़ी ने जो मुँह उठाए हैं, उनका मैं भी समर्थन करती हूँ और देश के लिए भी यह महत्वपूर्ण है। शुरू किया पहली शिक्षा को लेकर अपना सबसे पहला देश बना है, शासन चलता है संविधान के तहत जिसके पहले पन्ने का इस्तीफा हो गया तो उन्होंने गांव-गांव घूमकर 'स्कूल ठीक करो' वाला आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन में उन्होंने सोशल मीडिया पर डाली दूटे, पुराने स्कूलों की इतनी सारी तस्वीरों कि उत्तर प्रदेश में इनके स्कूलों में जाने पर पाबंदी लगा दी योगी सरकार ने। शिक्षा के बाद काजपा ने सुराशन को मुदा बनाया और दिखाया किस गंदगी में देश के आम लोग रह रहे हैं और फिर जब 'द इंडियन एक्सप्रेस' ने चुनाव आयोग में अंदरूनी मतभेद पर रिपोर्ट छापी तो इन्होंने ज्ञानेश कुमार का इस्तीफा मांगा सबसे बड़ा मुद्दा बनाया। मजे की बात यह है कि ये सारे मुद्दे वहीं हैं जो राहुल गांधी उठाते आए हैं काफी दिनों से, लेकिन उनकी आवाज अगर जनता सुन नहीं रही है, तो शायद इसलिए कि लोग परिवारवाद से चपे इन तमाम विषयी नेताओं से तंग आए हैं। मेरी अपनी राय में चुनावों में घांछली से जितना नुकसान हुआ है,

उससे ज्यादा नुकसान हुआ है परिवारवाद से इसलिए कि जब पूरे के पूरे राजनीतिक दल किसी किसी की निजी जायदाद बन जाते हैं, तो लोकतंत्र कमजोर हो जाता है। ऐसा तो राजा-महाराजाओं के समय में होता था जब सामंतवाद ही था देश के उन हिस्सों में, जिन पर अंग्रेजों का राज नहीं था। जब से भारत एक स्वतंत्र देश बना है, शासन चलता है संविधान के तहत जिसके पहले पन्ने पर लोकतांत्रिक देश है और हर भारतीय को अधिकार है अपने राजनेता खुद वोट डालकर चुनने का। इस विचार को कमजोर किया है परिवारवाद ने। ऊपर से पिछले कुछ वर्षों में लोकतांत्रिक संस्थाओं के संस्था करने की कोशिश रही है मोदी सरकार की। इन संस्थाओं में से अगर एक है जिसका वास्ता हम सबसे है वह है चुनाव आयोग। अगर और बताने के कहने पर करोड़ों लोगों के वोट छीन लिए जाते हैं किसी न किसी बहाने, तो इसका बहुत बड़ा मुद्दा बनना स्वाभाविक है। लेकिन राहुल गांधी के 'वोट चोरी' अभियान के बावजूद लोगों तक यह बात नहीं पहुंची। उनको एकांत में किसी दिन डेबक चिंतन करनी चाहिए कि क्यों नहीं लोगों तक उनकी बात पहुंच पाई। क्यों अपनी बात पहुंचाने में लगाना सफल हुए हैं काजपा के लोग...! दिवचस्प है यह, आगे देखते हैं होता है क्या।

हर आठ मिनट में बचपन गुम बचपन

— ऋतुपर्ण दवे—

भारत में बाल तस्करी ने एक ऐसी गंभीर समस्या का रूप ले लिया है, जो बच्चों के अधिकारों और अधिकारों को नष्ट कर रही है। तस्करी के शिकार बच्चों को न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक प्रताड़ना भी झेलनी पड़ती है। बच्चों को अगवा करने के बदले तौर-तरीके गहरी चिंता पैदा करते हैं। लापता होने वाले बच्चों के सरकारी आंकड़े रंगटे खड़े कर देते हैं। देश भर में हर साल हजारों बच्चे लापता हो जाते हैं। औसतन हर आठ मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है। इस पर विडंबना यह है कि कई कानूनों के बावजूद लापता बच्चों की बचपनगी की दर काफी कम है।

बाल तस्करी गिरोह बच्चों को अगवा कर कई बार उन्हें बाल श्रम या निष्ठावृत्ति के जरिए अपने लिए अपने के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यही नहीं, ऐसे बच्चों का यौन शोषण और अंगों की तस्करी की दौड़ भी झेलना पड़ता है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर बाल तस्करी गिरोहों पर कानून का शिकंसा क्यों नहीं कस पा रहा है?

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, जनवरी 2018 से 30 जून 2023 तक 275,125 बच्चे लापता हुए, जिनमें 6.2 फीसद से अधिक लड़के और दो लाख से ज्यादा लड़कियाँ हैं। सबसे ज्यादा 61,102 बच्चे मध्य प्रदेश से गायब हुए, जिनमें 49,024 लड़कियाँ और 12,078 लड़के हैं। दूसरे स्थान पर पश्चिम बंगाल है, जहाँ 49,129 बच्चे लापता हुए, जिनमें 41,808 लड़कियाँ और 7,321 लड़के हैं। तीसरा स्थान कर्नाटक का है, जहाँ 27,528 लापता बच्चों में 18,893 लड़कियाँ और 8,635 लड़के हैं। इसी तरह गुजरात में 20,081 लापता बच्चों में 16,432 लड़कियाँ और 3,649 लड़के हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में इस दौरान 22,964 बच्चे लापता हुए, जिनमें 15,365 लड़कियाँ और 7,599 लड़के हैं। वर्ष 2024 के आंकड़ों की कम नहीं है, इस दौरान देश भर में 98,375 बच्चे लापता हुए, जो 2023 की तुलना में आठ फीसद ज्यादा है। इन आँकों की छिटाकन है कि यह आँकों में लड़कियों की संख्या कहीं ज्यादा है।

एक और सरकारी आंकड़ा चिंता को बढ़ाता है। वर्ष 2023 में करीब बीस हजार बच्चे ऐसे थे, जो देश की सड़कों पर रहते थे। इनमें दस हजार बच्चे ही अपने परिवारों के साथ रहते थे, बाकी सभी बेघर एवं बेहोशरा थे। ऐसे बच्चों की बाल श्रम, अंग तस्करी या यौन अपराधियों का शिकार बनते हैं। सर्वोच्च न्यायालय को केंद्र सरकार की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, वर्ष 2020 से लगभग 36 हजार बच्चे लापता हैं, जिन्हें अब



तक खोजा नहीं जा सका। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो यानी एनसीआरबी के आँकों के ताले चलता है कि वर्ष 2022 में बच्चों के अपहरण के 16,262 मामले दर्ज हुए। वर्ष 2023 में देश भर में कुल 91,296 बच्चे लापता हुए, जिनमें 22,460 लड़के और 68,835 लड़कियाँ थीं। जबकि 2022 में यह संख्या 83,350 थी। यानी लापता बच्चों की संख्या में 9.5 फीसद की वृद्धि हुई।

इन आँकों को सार्वजनिक करने में बीस साल की देरी हुई और इसके लिए सहायक पला पिताना का हवाला दिया गया। ये तो वे आँकड़े हैं, जो पुलिस और अन्य जाँच एजेंसियों के पास दर्ज होते हैं। अगर ऐसे ही कई मामले होते हैं, जो पुलिस में दर्ज ही नहीं हो पाते।

बाल श्रम पर काम करने वाली संस्था कैलाश सत्याशी फिल्मन फाउंडेशन की एक रिपोर्ट बताती है कि कोविड-19 के बाद बच्चों की तस्करी के मामले 68 फीसद तक बढ़े। वर्ष 2016 से 2022 तक 13,549 बच्चों को तस्करी से बचाया गया, जिसमें से अस्सी फीसद बच्चे 13 से 18 साल के हैं। कानूनी के इस दौर में बाल तस्करी के नए तौर-तरीके सामने आने बिना बड़ाता है। इसमें आलगाइन नम का उपयोग कर दूर-दूर तक रहते पहले बच्चों के पैसे-जोले बढ़ाते हैं और फिर उन्हें अनौपचारिक रूप से बेचते हैं। यही, राष्ट्रीय स्तर पर लापता बच्चों का पता लगाने की दर करीब पैंसट फीसद है, जिसे संतोषजनक नहीं माना जा सकता। यह दर केरल में 95.9 फीसद, आंध्र प्रदेश में 88.7 फीसद, तमिलनाडु में 80.3 फीसद और मध्य प्रदेश में 69.8 फीसद है।

इन्हें यह आंकड़ा शर्मनाक नहीं है, जिसमें ऐसे बच्चों की शरावदगी हुई है, जिनके लापता होने की रिपोर्ट दर्ज नहीं थी।

सबसे पहले बच्चों के लापता होने और तस्करी के जाल में फँसने के कारणों को समझने की जरूरत है। अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी के अलावा सामाजिक भेदभाव भी इसके प्रमुख कारक हैं। आर्थिक तंगी के कारण दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों के बच्चों पर तस्करी

का जोखिम सबसे ज्यादा होता है। इन समुदायों में माता-पिता असरक काम के लिए अपने बच्चों को ठेकेदारी या जान-पहचान वालों के साथ भेज देते हैं, जहाँ वे बाल तस्करी गिरोहों के जाल में फँस जाते हैं और उनका लोला मुश्किल हो जाता है।

बच्चों की गुमगुमाई पर सर्वोच्च न्यायालय भी गहरी चिंता जता चुका है। इस वर्ष करवरी में शीर्ष अदालत हिस्सा से बच्चों के लापता होने की रिपोर्टों के पीछे किसी साइब्यापी या राज्य-विशिष्ट गिरोह की मौजूदगी का पता लगाने को कहा था। साथ ही कहा कि यह या पता लगाना जरूरी है कि इन मामलों के पीछे कोई समानता है या ये आसिकसक घटनाएँ हैं। शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार को सभी राज्यों से बच्चों के लापता होने के आंकड़े एकत्र करने की भी कहा था। न्यायालय ने सुझाव दिया कि बचाए गए बच्चों से पूछा जाना चाहिए कि ऐसे घटनाओं के लिए कौन जिम्मेदार है। सरकार की ओर से अदालत में कहा गया कि ओर से राज्यों ने लापता बच्चों और अभियोजन से संबंधित आंकड़े दिए हैं। मगर इनका विश्लेषण तभी किया जा सकता है, जब केंद्र को पूरे आंकड़े मिल जाएँ। तब अदालत ने सभी राज्यों को आंकड़े उपलब्ध बनाने के निर्देश दिए थे।

देश में मानव और बाल तस्करी पर रोकथाम के लिए कई कानूनों मौजूद हैं। संविधान का अनुच्छेद-23 मानव तस्करी और जबरन श्रम यानी बेगार को प्रतिबंधित करता है। वहीं, वैसाको व्यापार (रोकथाम) अधिनियम-1956, बाल संरक्षण अधिनियम-2012 और किशोर न्याय अधिनियम-2000 जैसे कानूनों मौजूद हैं। हाइसक अलावा केंद्र सरकार मानव तस्करी रोधी इकाई स्थापित करने के लिए राज्यों को विधिवत सहायता मुहैया कराते हैं, ताकि सभी जाँच और अपराधियों का एक डेटाबेस तैयार किया जा सके। देश भर में इस तरह की आठ से से अधिक इकाइयाँ काम कर रही हैं। इन्हें निर्मया कोष से सी करोड़ रुपए की मदद उपलब्ध कराई गई है।

कुछ दृश्य यादों में बस जाते हैं



— एन. रघुरामन—

जीवन में कुछ दृश्य ऐसे होते हैं, जिन्हें फिलाने की जरूरत नहीं होती। वे बस वहां मौजूद होते हैं और उन्हें हम देख भर लेते हैं। फिर भी वे सालों तक, कभी-कभी तो जीवनभर हमारे साथ बने रहते हैं। वह भी ऐसा ही एक दृश्य था। मैं उसे कभी नहीं भूलूँगा।

1995 का साल था। मैं काम से घर लौटा था। वह कि मैंने अपनी लगभग चार साल की बेटी को अकेले बोर्ड गेम खेलते देखा। वह बोर्ड के एक छोर से दूसरे छोर तक कुदती, कभी अपनी तरफ से खेलती तो कभी अपनी काल्पनिक पाटनर की तरफ से। वह ऐसा दृश्य था जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता।

मेरी आँखें भर आईं। कुछ समय पहले तक दिन भर उसके साथ खेलने के लिए एक पाटनर हुआ करती थी। लेकिन पिछले दो महीनों से वे उसके साथ नहीं थीं। वे उसकी दादी थीं। अब बच्ची अकेली रह गई थीं। मैंने तुरंत साबुन से हाथ धोए, फर्श पर बैठा और उसके साथ खेलने लगा। उसका पूरा ध्यान बोर्ड पर था। हर बार पाँसा फेंकने पर वह उत्साह से चीख उठती। मैं भी उसके साथ बीसला, लेकिन मेरी कानियाँ धीरे-धीरे आँसुओं से भीगी जाती रही थीं।

मेरी पत्नी ने अवाकफ रसोई का काम समेटा और दो बॉल लिए हमारे पास आकर बैठ गईं। खाना वहीं था—दही-चावल—लेकिन दोनों के लिए अलग तरह से बनाया गया था। बेटी के बॉल का दही-चावल अच्छी तरह से मसल दिया गया था, वहीं मेरे बॉल में कुछ और चीजें भी मिली हुई थीं। हम दोनों को बार-बार पाँसा फेंकना था, इसलिए हाथों से खाना संभर नहीं था। मैंने उसे पत्नी ने तय किया कि वह अपनी बच्ची और एक ऐसे 35 साल के बच्चे—जिसने हाल ही में अपनी माँ को खोया था—दोनों को अपने हाथों से खिलाएगी।

हर बार जब बेटी को कोर खिलाया जाता, हम ताली बजाते। हर बार जब पत्नी मुझे खिलाती, हमारी आँखें मिलती। उसकी आँखें

कुछ दृश्य यादों में बस जाते हैं



जीवन में कुछ दृश्य ऐसे होते हैं, जिन्हें फिलाने की जरूरत नहीं होती। वे बस वहां मौजूद होते हैं और उन्हें हम देख भर लेते हैं। फिर भी वे सालों तक, कभी-कभी तो जीवनभर हमारे साथ बने रहते हैं। वह भी ऐसा ही एक दृश्य था। मैं उसे कभी नहीं भूलूँगा।

जैसे कह रही थीं, मैं तुम्हारी पीड़ा समझती हूँ। प्लीजा शांत हो जाओ। न लेकिन जिसे खिलाया जा रहा था, उसकी आँखों में अकथनीय पीड़ा थी।

मुझे नहीं मालूम, कौन-सी पीड़ा ज्यादा थी। क्या वह माँ को खोने की पीड़ा थी? या उस मासूम बच्ची को अकेले खेलते देखने की, जो यह नहीं जानती थी कि उसकी प्रिय पाटनर अब कभी वापस नहीं आएगी? या फिर उस पिता का डर ज्यादा बढ़ा था, जो सोच रहा था कि अगर बेटी ने अचानक कुछ ऐसा भी पाटनर का पता पड़ा तो वह उसके साथ क्या करेगी? मैं भी उसके साथ बीसला, लेकिन मेरी कानियाँ धीरे-धीरे आँसुओं से भीगी जाती रही थीं।

मैं पर तीन-तीन दिन सगलों के होने के बावजूद वे अपने देर दिखते से भी छोटे पोते-पोतियों— इमान और रियाना को अगर ज्यादा नंगा तो कम से कम उतनी ही अस्मियव के सने थे। इन बच्चों ने ही ऑडिशन के सामने अपने दादा को इंटरव्यूस किया कि उन्होंने कैसे 'वू' नाम दिया। मेरे जेसा कोई आम आदमी इन दिग्गजों की मौजूदगी में होने पर गंद से फूला न समाना, लेकिन उन डॉक्टर के लिए ऐसा नहीं था। उन्होंने अपना हर सफाकता से पहले अपने परिवार, खासकर अपने पिता-पोतियों को रखा था।

फडा यह है कि जरूरी नहीं कि ज़िंदगी में सबसे ज्यादा मायने रखने वाले लोग सबसे बड़े मन पर खड़े हों। वे आपके पास बड़े वे छोटे भी हो सकते हैं। जो आपका ध्यान पाने का इंतज़ार कर रहे हैं। और आज ज़िंदगी में किसी की उछाड़ें तक पहुंच जाएँ, सफलता की असली कसौटी यही है कि क्या आप अम भी झुककर किसी बच्चे का हाथ थाम सकते हैं।

विपक्षी नहीं चाहते यूपी की सियासत में मुसलमानों की हिस्सेदारी —ओवैसी

देश की राजनीति में मुसलमानों की भागीदारी को लेकर विपक्षी दलों, खासकर समाजवादी पक्ष पर विगाना है। भारतीय में ज़रूरत में शामिल होने जाते समय ओवैसी दोषारोप कर रहे हैं। 2 बजे बहसका पत्र होगा। यहां उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और लम्बे संवोधित किया। ओवैसी ने आरोप लगाया कि विपक्षी दल नहीं पर जुल्म किए जाने का भी दावा किया।

आईएमआईएम को माजपा की 'बी टीएम' बताए जाने के आरोपों को लेकर भी ओवैसी ने विपक्षी दलों पर विगाना साजा। उन्होंने सरला किया कि यदि उनकी पार्टी माजपा की 'बी टीएम' है तो चुनाव, 2017, 2022 और 2024 के चुनावों में विपक्षी दल

चाहते कि उत्तर प्रदेश में मुसलमानों की कोई बड़ी राजनीतिक पार्टी बने और उनका राजनीतिक हिस्सेदारी बढ़े। ओवैसी ने कहा कि विपक्षी दल चाहते हैं कि 'अब्दुल' सिर्फ दूसरे विचार, नेताओं के समर्थन में नारे लगाए, उन्हें वोट दे और फिर अपने

मीडिया पर वायल है। इसमें कुछ लोग हाथों में लाठी-डंडे लिए दिखाई दे रहे हैं और महिलाओं पर हमला करते नजर आते हैं। घर चला जाए। उन्होंने कहा कि मुसलमानों को अपनी राजनीतिक हिस्सेदारी के लिए आवाज लगानी होगी। औबेसी ने आरोप उठाया कि कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यकर्ताओं से मुलाकात और संघर्षन के बाद वह श्रावस्ती में आयोजित जनसभा के लिए रवाना हों।



हर बाढ़ प्रभावित परिवार तक मदद पहुंचाना भाजपा सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने पीछित परिवारों को हर संभव सहायता का मोरोसा दिलाया। साथ ही संबंधित स्तर पर उनकी समस्याओं को पहुंचाने का काम कही। नागार्जुनी नदी में आई बाढ़ से तमकुहीराज क्षेत्र के दर्जनों गांव प्रभावित है। बाढ़ के पानी से खेतों में खड़ी फसलें बर्बाद हो गई हैं। कई परिवारों को अपने घर छोड़कर सुरक्षित और ऊंचे स्थानों पर राशन लेनी पड़ी है। इससे ग्रामीणों

प्रशासन और संबंधित विभाग की ओर से मरम्मत कार्य कराया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान वन्यजंतु तित्कारियों ने अधिकांशियों से तटबंध की जगहों पर विशेष ध्यान देने को कहा। उनका कहना है कि मौजूदा बाढ़ की स्थिति में तटबंध की सुस्था बेहद जरूरी है। निरीक्षण के दौरान श्रीकांत सिंह, दीपक मिश्र, राजेश्वर उपाध्याय, नवनीत पाल, श्रीधरा तिवारी, आलोक उपाध्याय, कुंवर शाही, संजय सिंह, ओपी सिंह, दिव्यिजय यादव और संजय गुप्ता सहित कई कार्यकर्ता

प्रभावित परिवारों ने बाढ़ के कारण
हो रही परेशानियों से उन्हें अवगत
के सामने रहने और रोजमरा की
जरूरतों का संकट खड़ा हो गया है।
मौजूद रहे। सभी ने बाढ़ प्रभावित
क्षेत्र की स्थिति और तटबंध पर चल

तटबंध में कटान के बाद रहे मरम्मत कार्य का जायजा लिया।

वडनगर से वाराणसी जा रही सेवा संकल्प यात्रा का स्वागत



बहराइच के पयागपुर विधानभा क्षेत्र के हुजुरपुर मंडल बल्थुनी। विद्यालय समाज विप्रेती के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने खुल्ला-मालाओ, पुष्पायों का राधा याचना का कार्यक्रम। भारत माता की जय के नारों से हुलाका गुं।

भगमदा बाजार, लालपुर गुजरादिपुर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्थानीय नागरिकों ने उत्साह से भाजपा याचना की। लोगो ने जगज-जगज पुष्पायों की। प्रमाणिकी के जमीन पर वदनन पर से शुरू हुई सारा संकल्प यात्रा विचार के बहराइच के पयागपुर विधानभा क्षेत्र के हुजुरपुर मंडल, पकड़ी।

पहुंरी। यह बाहर रौकी 17 सितंबर को नगीरी से शुरू हुई थी। कार्यक्रम की मीठी जन्मदिन से क्रमशः प्रमाणिकी के 25 वर्ष की सारा यात्रा है। बाजार के दैनिक काला, क्लोरोन, आयुध नारों, पोषक किण्वक से उत्साह जने जने कार्यक्रम हो रहे हैं।

इस मौके पर ब्लॉक प्रमुख अर्जीत प्रभास सिंह, निरंश विप्रेती, गुवागरी सोंयोजक अकिंत सिंह, डॉ. महेन्द्र प्रभास, मंडल प्रमुख, उमाशंकर सिंह, जिला मंत्री हरदीप विक्रम सिंह, विधानभा मंडल जिला उपमध्य आनंद प्रभास, मंडल अय्यर दुरेश सिंह कार्यकर्ता मंडल भाजपा पदाधिकारी प्रमाणिकी मंडल थे।

